ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

काकी
क्लास -७

पाठ का नाम –काकी

पाठ -२

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

लेखक परिचय

- सियाराम शरण गुप्त
- जन्मकाल- 1895 ई.
- मृत्युकाल- 1963 ई.
- जन्मस्थान- चिरगाँव (झाँसी)
- सियारामशरण गुप्त का जन्म सेठ रामचरण कनकने के परिवार में चिरगाँव, झांसी में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने घर में ही गुजराती, अंग्रेजी और उर्दू भाषा सीखी। सन् 1929 ई. में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और कस्तूरबा गाँधी के सम्पर्क में आये। कुछ समय वर्धा आश्रम में भी रहे। सन् 1940 में चिरगांव में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का स्वागत किया। वे सन्त विनोबा भावे के सम्पर्क में भी आये। उनकी पत्नी तथा पुत्रों का निधन असमय ही हो गया था अतः वे दु:ख वेदना और करुणा के कवि बन गये। 1914 में उन्होंने अपनी पहली रचना मौर्य विजय लिखी। सन् १९१० में इनकी प्रथम कविता 'इन्दु' प्रकाशित हुई।[1]
- चिरगाँव (झाँसी) में बाल्यावस्था बीतने के कारण बुन्देलखण्ड की वीरता और प्रकृति सुषमा के प्रति आपका प्रेम स्वभावगत था। घर के वैष्णव संस्कारों और गांधीवाद से गुप्त जी का व्यक्तित्व विकसित हुआ। गुप्त जी स्वयं शिक्षित कवि थे। मैथिलीशरण गुप्त की काव्यकला और उनका युगबोध सियारामशरण ने यथावत् अपनाया था। अत: उनके सभी काव्य द्विवेदी युगीन अभिधावादी कलारूप पर ही आधारित हैं। दोनों गुप्त बंधुओं ने हिन्दी के नवीन आन्दोलन छायावाद से प्रभावित होकर भी अपना इतिवृत्तात्मक अभिधावादी काव्य रूप सुरक्षित रखा है। विचार की दृष्टि से भी सियारामशरण जी ज्येष्ठ बन्धु के सदृश गांधीवाद की परदु:खकातरता, राष्ट्रप्रेम, विश्वप्रेम, विश्व शांति, हृदय परिवर्तनवाद, सत्य और अहिंसा से आजीवन प्रभावित रहे। उनके काव्य वस्तुत: गांधीवादी निष्टा के साक्षात्कारक पद्यबद्ध प्रयत्न हैं।

- उनकी भाषा शैली सहज, सरल साहित्यिक खड़ीबोली हिन्दी है। आपने व्यावहारिक शब्दावली का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। आपकी रचनाओं की शैली यथार्थ परक, सरस, वर्णनात्मक, विचारात्मक, चित्रात्मक एवं भावात्मक है।

सारांश

बालक श्याम को अबोध जानकर उसे माँ का अनुपस्थिति म दिलासा देने के विचार से बड़े लोगों ने उसे बहका दिया था। उन्होंने उसे बताया कि काका को मामा ले गया है। लेकिन धीरे-धीरे श्यामू को यह बात मालूम हुई कि काका भगवान के पास गई है, जो ऊपर आसमान म रहता है। श्यामू काका से मिलने के लिए कई दिन तक रोता रहा। जब वह नहीं आई तो उसने रोना बन्द कर दिया । क्योंकि यह स्वाभाविक बात थी। आखिर उसे रोना बन्द तो करना ही पड़ता। फिर भी काका से न मिल पाने का हृदय म गहरा दुख था। वह अकेला बैठा-बैठा यह सोचता रहता कि काका आसमान से किस प्रकार उसके पास आए। वह अबोध बालक दुख से ऊपर आसमान की ओर टकटकी लगाए रहता।

श्यामू की माँ "काका" को लोग श्मशान ले जाकर दाहकर्म कर आए थे। लोगों ने श्यामू को बताया कि काका मामा के घर गई ह। धीरे-धीरे श्यामू का रोना तो बंद हो गया परन्तु मन का शोक दूर नहीं हुआ। श्यामू ने अपने पिता विश्वेश्वर से एक पतंग ला देने को कहा। विश्वेश्वर के ऐसा न कर सकने पर श्यामू ने उसके कोट से चवन्नी निकालकर पतंग मँगाई और भोला को बताया कि यह पतंग ऊपर राम के यहाँ जाएगी। इसको पकड़कर काका नीचे आएगी। भोला ने सुझाव दिया कि पतंग का रस्सी मोटा होनी चाहिए। श्यामू ने विश्वेश्वर के कोट से रुपया निकालकर मोटा रस्सी मँगाई। रुपये का चोरी के कारण श्यामू की पिटाई हुई और विश्वेश्वर ने उसकी पतंग फाड़ दी और रस्सियों के बारे म पूछा। भोला ने बताया कि श्यामू रस्सियों से पतंग तानकर काका को राम के यहाँ से नीचे उतारेगा। हतबुद्ध विश्वेश्वर ने फटी पतंग पर चिपके कागज पर लिखा देखा- "काका"।

पाठ प्रवेश

- बच्चे कोमल और भावुक होते हैं । उनके मन को समझना बहत कठिन होता है । अपनी प्यारी काकी के लिए श्याम कुछ भी करने केलिए तैयार है । इस कहानी में बाल मन को समझने ,समझाने का प्रयास किया गया है यह बाल मनोबिज्ञान पर आधारित कहानी है । कहानी के द्वारा लेखक बच्चे। की मनोदशा का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है ।
- बच्यों के प्रति माता पिता का कर्तव्य , बच्यों के मनोभावों को समझने की प्रेरणा ,विपरीत परिस्थितियों में विचलित न होना , बच्यों के साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार करने का संदेश ,कभी कभी बड़ों से भी गलतियाँ हो जाति है ।
- संभाधित प्रश्न –
- क –क्या आप पतंग के वारे में जानते हैं ?
- ख –क्या आप कभी पतंग उड़ाये हैं ?
- ग –पतंग बनाने केलिए किन किन वस्तुयों का प्रयोग होता है ?
- घ –सुख या दुख क्या होता है ?

- **सामान्य उद्देश्य---**
- बाल मन में उमड़ती संवेदना को समझने की प्रयास करना । प्रेम पूर्वक ब्यबहार करने का संदेश देना । विपरीत परिस्थितियों में विचलित न होने की सदेश देना
- **विशिष्ट उद्देश्य—**
- बच्चों के प्रति माता पिता का कर्तव्य , बच्चों के मनोभावों को समझने की प्रेरणा ,विपरीत परिस्थितियों मे विचलित न होना , बच्चों के साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार करने का सदेश ,कभी कभी बड़ों से भी गलतियां हो जाति है ।
- **गृहकार्य**
- पाठ का पहला पन्ने को पढ़ कर उनके कठिन शब्दों को रेखांकित कीजिए
-

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP